MINOR RESEARCH PROJECT

With the Financial Assistance of

U.G.C.

File No. 23 : 144 / 12 (WRO)

Date : 05-02-2013

"अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना"

FINAL REPORT

Researcher

Smt. Vinita J.Sharma

Department of Hindi

ARTS COLLEGE LIMKHEDA

ZHALOD RAOD, LIMKHEDA-389140

Distt. DAHOD (GUJARAT STATE)

Final Report
Minor Research Project

"अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना"

भूमिका:

साहित्य समाज का मूल्यांकन तो है ही, मूल्य भी है। वह समाज का प्रतिबिम्ब और उसका परिष्कर्ता दोनों है। समाज की बौद्धिक चेतना का जीवन्त और व्यापक दर्शन साहित्य के माध्यम से ही संभव है। आज के जीवन के भाव-सत्य को अपनी समग्रता में सभी स्तरों और आयामों में व्यापकता एवं गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए उपन्यास से अधिक समर्थ माध्यम दूसरा नहीं है।

हिन्दी साहित्य के प्रति मेरी रूचि विधार्थी जीवन से ही रही है। हिन्दी की प्रतिष्ठित रचनाएँ तथा हिन्दी की पत्र-पत्रकिओं को मैं स्नेहपूर्वक पढ़ती रही हूँ। मेरे अध्ययन अध्यापन के दौरान कथा साहित्य से गुजरते हुए मैंने अनेक उपन्यासों का अध्ययन किया। उन उपन्यासों में निरूपित सामाजिक रूढ़ियों के सन्दर्भ, नारी चिन्तन निरन्तर मेरे मन को प्रभावित करते रहे । परिणामतः जब मुझे शोध कार्य करने का सुअवसर मिला तो मैंने तय किया कि मैं नारी विमर्श पर कार्य करूँगी। मेरे कुछ वरिष्ठ व सहयोगी मित्रों ने मुझे शोध कार्य करने की प्रेरणा दी।

विषय चयन:

भारतीय समाज में स्थित नारी-जीवन शुरू से ही साहित्य का विषय रहा है। समकालीन हिन्दी साहित्य की कल्पना नारी-जीवन चित्रण के बिना नहीं हो सकती। परिवार, समाज, विविध सेवा क्षेत्र एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में वर्तमान नारी का जीवन आज साहित्य का ही नहीं बल्कि वह लोगों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है।

जहाँ तक हिन्दी कला-साहित्य के क्षेत्र में नारी-विमर्श का सवाल है, उसका सूत्रपात तो मुंशी प्रेमचन्द से ही हो जाता है। नारी-जीवन की जटिलताओं और विषमताओं को लेकर लेखकीय अभिगम अनेक चिन्ताओं का साथ उजागर होता है।

अपने पिता प्रेमचन्द से विरासत में मिली इस सजग लेखनी को पकड़कर अमृतराय ने साहित्य में प्रवेश किया। अमृतराय के मार्क्सवादी जनवादी परिप्रेक्ष्य में पनपने वाले प्रगतिशील रचनाकार के रूप में देखा जाता है। स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात जब मुझे एम.फिल. में लघु शोध प्रबन्ध तैयार करने का अवसर मिला तों मैंने 'अमृतराय के उपन्यास साहित्य' को केन्द्र में रखकर अपना शोध प्रबन्ध तैयार किया। इस शोध प्रबन्ध तैयार करने के बाद अनुसंधान के प्रति मेरी रूचि एवं जिज्ञासा और बढ़ गयी।

अमृतराय का उपन्यास 'बीज', 'नागफनी का देश' उपन्यास ने मुझे नारी-विमर्श को लेकर सबसे अधिक प्रभावित किया। उसमें नारी के दुःख-दर्द उसकी पीड़ा आदि को व्यापक रूप से उजागर किया गया है। अमृतराय के उपन्यासों का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात मैंने यह अनुभव किया कि उनके उपन्यासों में नारियों के प्रति उनका दृष्टिकोण काफी व्यापक रहा है अपने पिता प्रेमचन्द की ही तरह नारियों के प्रति उन्हें विशेष सहानुभूति थी। लघु शोध प्रबन्ध की एक निश्चित सीमा होने के कारण उनके उपन्यासों में निहित नारी-विमर्श पर बृहद चर्चा नहीं हो पायी। अतः मैंने अपने इस **"माइनर रिसर्च प्रोजेक्ट"** का विषय **"अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना"** पसंद किया और अपने अनुसंधान कार्य को शीर्षक दिया -

शीर्षक - **"अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना"**

प्रस्तुत शोध कार्य का महत्व:

सृष्टि के निर्माण और संस्थान में नारी की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का मूल आधार नारी रही है किन्तु भारतीय समाज में नारी का जीवन अत्यन्त संघर्षशील रहा है। उत्थान-पतन के कितने दौरों से गुजरती हुई नारी समस्याओं की श्रृंखला में श्रृंखलित अनेक समस्याओं से कुंठित, जकड़ी हुई नारी समाज हमारे सामने है इसी नारी की अनेक समस्याएँ है जो सदियों से उनका पीछा नहीं छोड़ती। अनेक समस्याओं से श्रृंखलित नारी जीवन के इर्द-गिर्द अनेक ज्वलन्त प्रश्न है जिनकी चर्चा करना आवश्यक है।

ARTS COLLEGE

कहा जाता है कि प्रेमचन्द का युग नारी मुक्ति एवं नारी स्वाधीनता का युग था। इस युग में स्वयं नारी ने अपने उद्धार के लिए कमर कस ली थी। प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासों का अध्ययन करते है तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि इस युग में जहाँ एक ओर नारी उद्धार, नारी स्वतंत्रता आदि की बातें हो रही थी वहीं दूसरी ओर आचरण एवं व्यावहारिक स्तर पर नारी अब भी शोषण का शिकार थी। इस युग मे सुधारादि की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले लोगों की मानसिकता में भी संकीर्णता के दर्शन होते है। उनकी कथनी और करनी में बड़ा अंतर दिखाई देता था। सुधार की प्रवृत्ति केवल नाम मात्र ही रही। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में नारी की जिन दशाओं का चित्रण किया है उससे यही प्रतीत होता है कि इस युग में नारी का जीवन अत्यन्त कष्टप्रद था। इस शोध कार्य में मेरी प्रमुख दृष्टि यही है कि जीवन के प्रश्नों और समस्याओं को स्त्री किस दृष्टिकोण से देखती है? क्या वह अपनी पुरानी छवि से बाहर निकल पाई है? अपने इस शोध प्रबन्ध में अमृतराय ने अपने उपन्यासों में नारी मुक्ति की जो दृष्टि हमारे समक्ष रखी है उसे एक नये आयाम के साथ समाज के समक्ष नारी के सच्चे चित्र को प्रस्तुत करने में ही मेरे इस शोध कार्य की उपयोगिता सिद्ध हो सकेगी।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में अमृतराय का योगदान:

साहित्य आवश्यक रूप से समाज-सापेक्ष होता है। किसी भी साहित्य का वास्तविक अध्ययन तत्कालीन इतिहास, सांस्कृतिक परम्परा, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिवेश को सन्दर्भ में रखकर देखने से ही होता है। कोई भी साहित्यकार शून्य से उत्पन्न नहीं होता, उसके साथ उसकी परम्परा होती है।

अमृतराय प्रगतिशील, विचारधारा के प्रमुख चिन्तक एवं कथाकार है। यथार्थवादी कथाकारों में उनका स्थान प्रथम पंक्ति में समादृत है। हिन्दी कथा साहित्य के सम्राट प्रेमचन्द के वे कनिष्ठ पुत्र रहे है। उन्हें प्रारम्भिक जीवन में ही साहित्यिक सांस्कृतिक परिवेश प्राप्त हुआ है। अतः वे एक सुशिक्षित सभ्रांत परिवार के ही सदस्य नहीं थे बल्कि सामाजिक जन-जीवन में परिवर्तन लाने वाले 'पक्षधर' कथाकारों की पंक्ति के अग्रिम सैनिक रहे हैं।

अमृतराय बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार है उन्होंने प्रेमचन्द की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परम्परा को आगे बढ़ाया है। भैरवप्रसादगुप्त, यशपाल, रांगेयराघव, नागार्जुन, भगवतीचरणवर्मा आदि प्रगतिशील धारा के उपन्यासकार माने जाते है। जिसकी सशक्त परम्परा में अमृतराय को भी परिगणित किया जाता है। प्रगतिशील आस्थाओं के अनुरूप अमृतराय ने निम्न मध्यवर्गीय जीवन के विकास और चेतना के रूपान्तरण हेतु सक्रिय लेखन की प्रविधि को अपनाया है। कृष्णा माहेश्वरी के विचारानुसार- "अमृतराय के युग में दो प्रकार की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती है-व्यक्तिवादी और समाजवादी। द्वितीय महायुद्ध से उत्पन्न संत्रास से भारत में स्वतंत्रता के पश्चात आस्था और विश्वास को जबर्दस्त क्षति पहुँची। उसने समस्त मूल्यों का अवमूल्यन कर साहित्यिक वर्ग की विचारधारा को परिवर्तित कर दिया। अमृतराय पर भी इसका प्रभाव पड़ा है।"

अमृतराय के साहित्य को हम प्रगतिवादी साहित्य से प्रभावित पाते है। मानवतावाद की भी उसमें स्पष्ट झलक मिलती है। प्रगतिवादी आन्दोलन से प्रेरित होकर अमृतराय ने अपने साहित्य में शोषण के विरूद्ध आवाज उठायी है। अमृतराय के रचनाकाल के प्रारम्भ से ही विदेशी शासकों की पूँजीवादी नीति का प्रसारण एवं शोषण का अतिरेक रहा। आर्थिक व्यवस्था के विश्रृंखल होने से सभी वर्गों में अंसतोष बढ़ा। बंगाल के भयंकर अकाल, भाषण भूखमरी, स्वतंत्रता के साथ देश का विभाजन इन सभी बातों का चित्रण अमृतराय के साहित्य में बखूबी से हुआ।

अमृतराय ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन को पर्याप्त अधिकार, सम्मान और जीवनाधिकार देने की पेशकश की है। पुरूष वर्ग ने नैतिकता, यौन-स्वच्छन्दता, पाप-पुण्य की अवधारणा पर अपना ही वर्चस्व कायम किया है, पर नारी वर्ग भी अपने जैविक-सामाजिक सम्बन्धों में पुरूषों के समकक्ष है, उन्हें भी इच्छित जीवन शैली अख्तियार करने का हक है। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में इसे यथार्थवादी ढंग से सबके सामने प्रस्तुत किया है। साथ ही तत्कालीन सामजिक व्यवस्था एवं कुरीतियों के चलते नारी जाति की हुई दुर्दशा का चित्रण भी उनके साहित्य में विशेष रूप से मिलता

है। दलित एवं नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं को भी अमृतराय ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

अमृतराय ने अपने उपन्यास साहित्य में मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन को ही अपना विषय बनाया है। उनका क्षितिज अनेक समस्याओं को समाहित किए हुए है। उसमें नारीयों की व्यथा-कथा है। युवा छात्र वर्ग की परिवेशगत समस्याएँ हैं। बुद्धिजीवियों का उहापोह, मानसिक संघर्ष है और मध्यवित्तीय व्यक्ति की आर्थिक परेशानियों का लेखा-जोखा है। अमृतराय ने साहित्य के विशिष्ट अंग-उपांगों अथवा विधाओं के विषय में अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन ही नहीं किया है बल्कि साहित्य के सामान्य प्रश्नों के सन्दर्भ में उन्होंने विस्तार से सोचा और लिखा है। उन्होंने रचना, उद्देश्य, प्रतिबद्धता, विचारधारा विषय वस्तु और रूप कलारूप तथा अन्य विषयों के सम्बन्ध में जो चर्चा की है उसमें उनका एक साहित्यिक चिन्तन ही सामने नजर आता है।

अमृतराय के कथा साहित्य में उच्चवर्ग के स्वार्थ, स्वेच्छाचार और निरंकुशता को अभिव्यक्ति देने के साथ-साथ, साधनहीनता और आर्थिक अभावों के बीच अपनी कुंठा के लिए महत्वकांक्षी लेकिन साथ ही उन महत्वकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ मध्यमवर्ग लगातार असंतोष, आत्महीनता, आक्रोश और दयनीयता के बीच किस प्रकार अपने जीवन को जीता चल रहा है उसका विवेचन इनकी रचनाओं में पाते है। अमृतराय ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में व्यापारी वर्ग, प्रशासन, शिक्षा, राजनीति, पुलिस, सार्वजनिक विभाग तथा जीवन के लगभग सभी सन्दर्भों में पनप रहे भ्रष्टाचार के प्रति अपनी रचनाओं में चिन्ता प्रकट की है।

उपन्यासकार एक सक्रान्ति युग से जूझता है। अपनी हलचलों को प्रतिध्वनित करता है। अमृतराय की कलम खूब मजबूत और सशक्त है। उनका भारतीय जीवन और इतिहास का अध्ययन भी सम्यक और पका हुआ है। अमृतराय ने साहित्य की अनेक विधाओं में लिखा। सभी में उनका लेखन समान रूप से सशक्त प्रभाव डालनेवाला हैं, उसमें लेखक का शानदार गर्वीला, संवेदनशील, भावनापूर्ण व्यक्तित्व साफ-साफ दिखाई देता है।

अमृतराय के साहित्य की उपयोगिता:

अमृतराय का लेखन काल स्वतन्त्रता के पूर्व से ही आरम्भ हो जाता है। प्रगतिशील लेखक संघ के वे प्रमुख सदस्य रहे हैं। उपन्यासकार के रूप में स्वतंत्रता के पश्चात ही प्रतिष्ठित हुए है। प्रगतिशील साहित्यकार के रूप में उन्होंने अपने युगीन परिवेश का कलात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

अमृतराय ने विपुल मात्रा में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, व्यंग्य, आलोचना, यात्रावृत्त एवं अनुवाद साहित्य रचा है। साहित्य में संयुक्त मोर्चा और नयी समीक्षा सम्बन्धी आलेख उन्हें एक सफल आलोचक के रूप में स्थापित करते है। राजनीति एवं पत्रकारिता में सक्रिय भाग लेते हुए उन्होंने प्रेमचन्द द्वारा स्थापित 'हंस' पत्रिका के प्रकाशन को जारी रखा। 'कलम का सिपाही' जीवनी लेखन हिन्दी के जीवनी साहित्य में एक मील का पत्थर कार्य माना जाता है। अमृतराय की रचनाधर्मिता बहुआयामी है। कोई भी रचनाकार सच्चे अर्थों में तभी अपनी सार्थकता प्रमाणित कर पाता है, जब वह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक रूपों में युग और युगीन मनुष्यों को आलोचनात्मक यथार्थ के रूप में पुनः सृजित करता है। इस दृष्टि से कथाकार अमृतराय अप्रतिम है।

अमृतराय एक प्रतिबद्ध रचनाकार है उनका कथा साहित्य न केवल मध्यवर्गीय जीवन की अनेकानेक समस्याओं से जुड़ा है बल्कि वह स्वातंत्र्य संघर्ष की विभीषिका को बतलाते हुए किसान मजदूर आदि निम्न मध्यवर्ग की शोषण प्रक्रिया को भी उजागर करता है। वर्तमान समय में जो 'नारी-विमर्श' और 'दलित चेतना' पर कार्य हो रहा है उसके बीज को हम निश्चित रूप से प्रगतिवादी रचनाकारों के साहित्य में ढूँढ सकते है इसलिए इतने वर्षों के बाद भी उनकी प्रासंगिकता को लेकर चर्चाएँ रही है। अमृतराय और उनका साहित्य किसी एक काल तक सीमित नही हैं वे पुराने होकर भी नये ही प्रतीत होते है उन्होंने अपने समय में समाज के माध्यम से आने वाले कल को देखने का कार्य किया था। इस दृष्टि से उनके साहित्य की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना:

उपन्यासकार के रूप में अमृतराय का रचनाकाल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आरंभ होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जहाँ एक ओर अंग्रेजों से देश को मुक्ति मिली वहीं दूसरी ओर विभिन्न समाज सुधारकों के रचनात्मक प्रयासों से समाज में परिवर्तन और विकास के चिन्ह भी दिखलाई पड़ने लगे थे। नारी की सामान्य स्थिति में सुधार हो रहा था।

प्रगतिवादी साहित्यकारों की भाँति अमृतराय का भी नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण मिलता है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की विभिन्न स्थितियों और समस्याओं का दर्शन कराया है। नारियों के प्रति तो उन्हे विशेष सहानुभूति थी। उन्होंने भारतीय समाज में हो रही नारी की दुर्दशा को अपने उपन्यासों में यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। विशेषकर उनके उपन्यास साहित्य में नारी वर्ग के पिछड़ेपन का कारण हमारी सामाजिक परम्पराओं और आर्थिक परिवेशगत विसंगति को दर्शाया है।

अमृतराय नारी के उत्कर्ष के लिए सतत प्रयत्नशील रहे है। वे नारी को उचित मान-सम्मान व अधिकार दिलाने के पक्ष में रहे है। नारी के चरित्र को ऊपर उठाने के लिए अपने उपन्यासों में उन्हें विशेष रूप से प्रस्तुत किया है। 'बीज' उपन्यास की पात्रा राजेश्वरी बेमेल विवाह का अभिशाप ढो रही है। वह हिन्दू समाज की अभिशप्त एवं यथास्थितिवादी का प्रतिनिधित्व करती है समाज के प्रति अपने विचारों को अमृतराय ने राजेश्वरी के माध्यम से व्यक्त किया है-

"मेरी कोख को जलाया किसने, यह कोई न्याय नहीं है। क्यों सहूँ मैं? समाज? बस संतोष के लिए है समाज? अभी कहाँ मर गया समाज? मैं ठोकर मारती हूँ ऐसे समाज को।"

अमृतराय की सुविचारित दृष्टिकोण रहा है कि जब तक पूँजीवादी - सामन्ती मनोवृत्तियाँ नहीं बदलती, नारी जीवन अभिशापग्रस्त बना रहेगा। 'बीज' में राजेश्वरी, पार्वती, प्रमिला, 'हाथी के दाँत' में चम्पाकली और रामसिंह की माँ की कहानी ऐसी ही नारी की कहानी है जो पुरूष की वासना का शिकार होती है। पूँजीवादी व्यवस्था में प्रेम किस प्रकार भोग में बदल गया है और नारी किस प्रकार अधिकारों से वंचित रही है

इसका ज्वलन्त उदाहरण 'बीज' की राजेश्वरी, मालती और 'नागफनी का देश' की मदालसा है। मदालसा अपने लम्पट प्रेमी श्रीकान्त द्वारा ठगी जाने पर लज्जित नहीं होती वह प्रतिज्ञा करती है -

"नायक भी जियेगा, नायिका भी जियेगी और दोनों का पाप भी जियेगा, और कहानी आगे बढ़ेगी . . . सबको प्रेम करने का अधिकार है।"

अमृतराय ने 'बीज' उपन्यास में प्रेम और विवाह की समस्या को व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया तो राजेश्वरी के रूप में अनमेल विवाह और परित्यक्ता नारी की समस्या को उठाया है, तो जमुना के रूप में दहेज के अभाव में कुँआरी रह जाने वाली लड़कियों की समस्या है। 'धुआँ' में काजल और लतिका दो ऐसे नारी पात्र है जिनको नियति-निर्धारक समाज ने पतिता का नाम दिया है कहने का तात्पर्य यह है कि अमृतरायजी के उपन्यासों में शोषित नारी के बाह्य एवं अर्न्तजगत पर पैनी निगाह है। अमृतराय नारी जीवन के पिछड़ेपन के कार्य-कारणों की तार्किक विवेचना भी प्रस्तुत करते है। विशेषकर उनकी सहानुभूति वेश्या जीवन के उद्धार की रही है। 'धुआँ' उपन्यास में उन्होंने अपने विचार रखे है-

"शरीर का व्यवसाय करने वाली किसी लड़की को कुलटा कह देना कितना सरल है। हमारा यहँ पवित्र्याभिमानी ढोंगी समाज।"

अमृतराय ने केवल मध्यवर्गीय नारी का ही चित्रण नहीं किया है बल्कि उनके उपन्यास साहित्य में निम्न, दीन-हीन-पात्रों का चित्रण भी मिलता है और उच्च मध्यवर्ग के साथ-साथ अभिजात्य वर्ग के आधुनिक नारी पात्र भी उनके उपन्यासों में सशरीर उपस्थित हुए है।

अमृतराय ने अपने समय की वैवाहिक प्रथा से भी भली-भाँति प्रचलित थे। उस युग में विवाह के अन्तर्गत प्रचलित दहेज-प्रथा ने नारी जाति के सुखमय जीवन दाम्पत्य जीवन को जलाकर राख कर दिया था। कई बार दहेज समस्या के कारण निर्धन माँ-बाप को अपनी पुत्र का विवाह करना पहाड़ सा प्रतीत होता है। कभी-कभी आर्थिक समस्या के कारण लड़कियों को बिना किसी अपराध के कुँआरी रहना पड़ता है अमृतराय ने इस समस्या को 'बीज ' उपन्यास में उजागर किया है-

"बिना पैसे क्या कहीं लड़की का ब्याह नही होता है? रूप जवानी गुन सहूर कला-कविता-पैसे के बिना सब वृथा है। सौ बात की एक बात यह है कि दहेज के बिना कन्या-दान नहीं होता, पहले कभी नहीं हुआ तो अब कैसे होगा? दहेज लेना पाप है, लड़की का घोरतम अपमान है।"

अमृतराय नारी के स्वतंत्र तो बनाना चाहते थे किन्तु उसे स्वच्छंद बनाना नहीं चाहते। उनके मन में हमेशा भारतीय नारी का आदर्श चित्र बना रहा वे पाश्चात्य सभ्यता के रंग कतई पसन्द नहीं करते, 'हाथी के दाँत' में अमृतराय ने ऐसी ही नारी का चित्र खींचा है जो मध्यवर्गीय परिवार से है लेकिन आधुनिक चका-चौंध ने उसे मार्ग से विचलित कर दिया परिणामस्वरूप अपने शौक को पूरा करने के लिए वह अपना वैवाहिक जीवन नष्ट कर देती है। अमृतराय को ऐसी पाश्चात्य सभ्यता बिल्कुल रास नहीं आती, जो नारियों को भोग-विलास की पुतली बना दें।

अमृतराय का नारी विषयक दृष्टिकोण बड़ा विशाल है उनका आदर्श काफी ऊँचा है। वे नारी को पुरूष की तुलना में कई गुना श्रेष्ठ समझते थे। नारी को उचित मान-सम्मान देने की हिमायत करते है वह 'बीज' उपन्यास में अपना मन्तव्य भी प्रकट करते मिलते है-

"स्त्री जीवन संग्राम में पुरूष की सहयौद्धा हो, साथ लड़े, साथ मरे और एक दूसरे से अंश लेकर दोनों का व्यक्तित्व बने। स्त्री को घर के तहखाने में बन्द न किया जाए, इसकी प्रतिभाओं को मुक्त किया जाए, अर्थोपार्जनके लिए भी-ताकि उसका भी स्वतंत्र अस्तित्व हो।"

अमृतराय ने अपने उपन्यासों में स्त्री चरित्रों की गरिमा को बनाए रखने के लिए पूरा प्रयत्न किया है। आज के इस युग में पुरूष को नारी को एक समान दर्जा देना चाहिए, उनकी भावनाओं और इच्छाओं को समझना चाहिए। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में एक ओर जहाँ नारी के वास्तविक चित्र को प्रस्तुत करके उसके दुःख-दर्द व पीड़ा से समाज को अवगत कराया है, वहीं दूसरी ओर खुद नारी के सशक्त बनाने के लिए उनमें स्वाभिमान की भावना को जगाने का कार्य भी किया है। नारी के अबला रूप

के साथ-साथ उसके सबला रूप को भी प्रस्तुत किया है, जो प्रत्येक नारी को पुरूषसत्तामक व्यवस्था के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा देता है।

अपने इस शोध कार्य को सुविधा के लिए निम्नलिखित पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है-

अध्याय - 1 अमृतराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय - 2 प्रेमचन्दोत्तर युग में नारी केन्द्रिय उपन्यास: विहंगावलोकन

अध्याय - 3 प्रेमचन्दोत्तर युग में भारतीय समाज में नारी की स्थिति

अध्याय - 4 अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना

अध्याय - 5 उपसंहार

अध्याय - 1 अमृतराय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अमृतराय प्रगतिशील विचारधारा के प्रमुख चिन्तक एवं कथाकार है। यथार्थवादी कथाकारों में उनका स्थान प्रथम पंक्ति में समादृत है। हिन्दी कथा साहित्य के सम्राट प्रेमचन्द के वे कनिष्ठ पुत्र रहे है। उन्हें प्रारम्भिक जीवन में ही साहित्यिक सांस्कृतिक परिवेश प्राप्त हुआ है।

किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व निमार्ण में उसके पारिवारिक परिवेश, वंश, कुल-गोत्र एवं शैक्षणिक अभ्यास एवं विचारधारा दर्शन का महत्वपूर्ण योगदान होता है। साहित्यकार संवेदनशील प्राणी होता है इसलिए उसके पारिवारिक प्रभाव एवं युगबोधी सन्दर्भ चेतना तथा अवचेतन पर गहरा प्रभाव डालते है। अमृतराय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार रहे है। उन्हें पारिवारिक रूप से साहित्यिक, सांस्कृतिक दाय प्रेमचन्द और शिवरानी देवी जैसे पिता और माता से प्राप्त हुआ। अमृतराय ने अपने जीवन में विपुल साहित्य का निमार्ण किया है वे मात्र उपन्यासकार, कहानीकार, अनुवादक एवं आलोचक ही नहीं है बल्कि हिन्दी-उर्दू-अंग्रेजीं-बंगला भाषा के जानकार अध्यता भी है। विश्व की कई प्रसिद्ध कृतियों का उन्होंने अनुवाद किया है परन्तु हास्य-व्यंग्य की रचनाओं के साथ 'हंस' का संपादन भी किया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत अमृतराय के व्यक्तित्व एवं उनके कृतित्व का परिचयात्मक विवेचन है इसके अनतर्गत उनके जन्म पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा-दीक्षा, साहित्य-सृजन का प्रारंभ एवं व्यवसाय, प्रेरणा-प्रोत्साहन एवं पुरस्कार को प्रस्तुत करते हुए उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का निरूपण किया है। कृतित्व के अन्तर्गत उनके समग्र साहित्य का परिचय दिया है। इन कृतियों का परिचय देने के बाद निष्कर्ष की प्रस्तुति है।

अध्याय-2 :प्रेमचन्दोत्तर युग में नारी के केन्द्रिय उपन्यास : विहंगावलोकन

हिन्दी उपन्यास साहित्य अपनी विकास यात्रा में परिवर्तन के अनेक आयामों से गुजर चुका है। उनमें व्यक्त नारी जीवन का चित्रण भी काफी संघर्षपूर्ण रहा है। हिन्दी उपन्यास साहित्य के अन्तर्गतनारी जीवन में आये उतार-चढ़ाव को प्रस्तुत करने के लिए ही द्वितीय अध्याय 'प्रेचन्दोत्तर युग में नारी केन्द्रिय उपन्यासःविहंगावलोकन' की रचना की गई है।

प्रेमचन्द पूर्वयुगीन उपन्यासों में नारी के जो चित्र मिलते है, वे ज्यादातर भोग्या के रूप में ही अधिक थे। इस युग के उपन्यासकारों की दृष्टि रीतिकाल की श्रृंगारिक भावना से ओतप्रोत थी। इस युग में कहीं भी नारी की पीड़ा, उसके दुःख-दर्द को केन्द्र में रखकर किसी भी उपन्यास की रचना नहीं हुई। प्रेमचन्द युग में आकर स्वयं नारी अपने अधिकार एवं स्वतंत्र अस्मिता के प्रति जागृत दिखाई देती है। उनमें आत्म गौरव व आत्मसम्मान की झलक दिखाई देती है। इस युग में बहुत से विचारकों एवं स्वायत्त संस्थाओं के परिणाम स्वरूप नारी जीवन में जो परिवर्तन आये, उसे साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया।

सन् 1936 में मुंशी प्रेमचन्द जी के देहान्त के साथ ही प्रेमचन्द युग का समापन समझा जाता है। प्रेमचन्द के उपरान्त भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में अनेक परिवर्तन हुए। इसी बीच विश्वव्यापी द्वितीय महायुद्ध, बंगाल का अकाल, देश विभाजन, साम्प्रदायिकता आदि दुःखद घटनाओं ने राष्ट्रीय जीवन के अस्थिपंजर ढीले कर दिए। चारों ओर अनास्था, कुंठा, मोहभंग,

बिखराव, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, अविश्वास का वातावरण फैल गया। इन सभी कु-प्रवृत्तियों की स्पष्ट झलक प्रेमचन्दोत्तर युग के हिन्दी उपन्यासों में दिखाई देती है।

प्रेमचन्दोत्तर युग में हिन्दी साहित्य में अनेक नवीन प्रवृत्तियों का उदय हुआ, जो बदलते हुए काल की ही देन है। इस समय उपन्यासकार नारी का चित्रांकन यथार्थ एवं आदर्श की समन्वित भावभूमि पर कर रहे थे। उस समय एक ओर शिक्षा विकास की योजनाएँ नारी को प्रभावित कर रही थी। दूसरी ओर स्वाधीनता संग्राम की उत्तेजना भी नारी को जागृत बना रही थी। नारी के समक्ष उसका मार्ग निश्चित हो चुका था। वह समझ गई थी कि वह पुरूष की दासी नहीं अर्धांगिनी है। घर, समाज, देश सभी पर उसका पुरूष के समान अधिकार है।

प्रेमचन्दोत्तर युग में अनेक उपन्यासकारों ने विषय विविधता की छटा बिखेरी, उसमें नारी चित्रण को भी प्रधानता मिली। नारी को आदर्श की प्रतिमा से निकालकर यथार्थ की भावभूमि पर खड़ा किया है। इस काल में उपन्यास, विधा का चतुर्मुखी विकास हुआ। यथार्थ के नये आयामों की ओर उपन्यासकार उन्मुख हुए। उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्दोत्तरयुग में नारी जीवन की इस संघर्षमय यात्रा को मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक नारी केन्द्रिय उपन्यासों के माध्यम से नारी के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों प्रकार के संघर्षों का चित्रण प्रस्तुत है। अपने शोध कार्य के द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख नारी केन्द्रिय उपन्यासों के परिचयात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय - 3 प्रेमचन्दोत्तर युग में भारतीय समाज में नारी की स्थिति

प्रत्येक साहित्यकार की दृष्टि देश-काल से बँधी होती है। वह जिस युग में जीता है, उस युग के चित्र को अपने साहित्य में बखूबी से प्रस्तुत कर देता है। वह कालनिरपेक्ष कभी नहीं होता। अतः **'अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना'** के अध्ययन के लिए भी तत्युगीन भारतीय समाज की परिस्थितियों को जानना तथा उस युग में नारी की क्या स्थिति रही होगी इसका निश्चित रूप से अध्ययन कर लेना अति आवश्यक हो जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के तृतीय अध्याय में 'प्रेमचन्दोत्तर युग में भारतीय समाज में नारी की स्थिति' के अन्तर्गत वैदिककाल से लेकर मध्यकाल

तक की नारी यात्रा के विविध सोपानों के साथ पूर्व प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास, प्रेमचन्दकालीन हिन्दी उपन्यास व प्रेमचन्दोत्तरकालीन हिन्दी उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है।

प्रेमचन्दोत्तर युग सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में चरम संघर्ष का युग था। इस युग का भारतीय समाज हर पुरानी चीज को उद्ध्वस्त करने पर तुला था। जिस प्रकार राजनीतिक गतिविधियाँ संघर्ष के चरमोत्कर्ष पर पहुँची थी, उसी प्रकार सामाजिक जीवन भी परिवर्तन के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था। यह वही युग था, जहाँ बहुत से समाज सुधारकों एवं स्वायत्त संस्थाओं ने मध्यकालीन जड़ता को दूर करने के अनेक प्रयास किये। तत्युगीन सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक आंदोलनों तथा शिक्षा एवं पश्चिमी सभ्यता के परिणाम स्वरूप जो परिवर्तन आये, उससे तत्कालीन सामाजिक जड़ता, उनके अंधविश्वास एवं कुरीतियों को दूर करने में काफी सहायता प्राप्त हुई। प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत इन्हीं आन्दोलनों के चलते स्त्रियों की शिक्षा, दहेज-प्रथा, विधवा समस्या, पारिवारिक समस्या, अनमेल विवाह आदि अनेक ऐसे ज्वलन्त प्रश्न है जिन्हें चित्रित करने का प्रयास किया गया है। प्रेमचन्दोत्तर युग में भारतीय समाज में नारी का क्या स्थान रहा है तथा भारतीय नारी के अतीत से लेकर प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासों में नारी की स्थिति से लेकर प्रेमचन्दकालीन व प्रेमचन्दोत्तर युग तक भारतीय समाज में नारी की स्थिति को क्रमानुसार प्रस्तुत किया है।

अध्याय - 4 अमृतराय के उपन्यासों में नारी चेतना

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत अमृतराय के 'बीज', 'नागफनी का देश', 'भटियाली', 'हाथी के दाँत', 'धुआँ', 'सुख-दुःख' उपन्यासों को केन्द्र में रखकर नारी से जुड़ी संवेदना तथा उनकी विविध समस्याओं को प्रमुख रूप से अभिव्यक्ति दी है। अमृतराय का रचनाकाल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रारम्भ होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विभिन्न समाज सुधारकों के रचनात्मक प्रयासों से समाज में परिवर्तन और विकास के चिन्ह भी दिखलाई पड़ने लगे थे। नारी की सामान्य स्थिति में भी पर्याप्त सुधार हो रहा था। अमृतराय ने भी अपने उपन्यासों में नारी के सच्चे चित्र को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अमृतराय की नारियों के प्रति विशेष सहानुभूति थी। उन्होंने भारतीय समाज में हो रही नारी की दुर्दशा को अपने उपन्यासों में यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। एक नारी को माँ, बेटी, बहन, पत्नी, बहू, ननद, सास आदि विविध रूपों में चित्रित करते हुए उसकी पीड़ा, उसके दुःख-दर्द, उसकी कुंठित स्थिति आदि को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया है। इसके अलावा वेश्या समस्या, आर्थिक निराश्रिता, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, शिक्षा समस्या, प्रणय में गृहत्याग की समस्या, विधवा समस्या नारी और रूढ़िवादिता, स्त्री पुरूष सम्बन्धों की भूमिका में नारी, आधुनिकता और नारी आदि स्थितियों और समस्याओं का दर्शन कराते हुए उनको न्याय दिलाने का पूरा प्रयत्न किया है।

अमृतराय का नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण है। उन्होंने उसकी समस्याओं का सम्यक विश्लेषण कर उसके निवारण के लिए, तर्कसम्मत समाधान भी प्रस्तुत किये है। माता बनने को वह उसकी विवशता न मानकर सामाजिक उत्तरदायित्व मानते है। वह स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में उच्छश्रृंखलता को निंदनीय एवं त्याज्य मानकर हमेशा वेश्यावृत्ति निवारण के पक्षपाती रहे है। अमृतराय नारी शिक्षा के हिमायती थे उन्होने अपने उपन्यासों में नारी चरित्रों के माध्यम से शिक्षा का महत्व परिवार एवं समाज में उसकी उपयोगिता दिखाकर एक आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में नारी आदर्श की जो कल्पना की है नारी की स्वाधीनता का जो स्वप्न देखा है उसे इस अध्याय में प्रस्तुत करना ही प्रमुख लक्ष्य रहा है।

अध्याय - 5 उपसंहार

पंचम अध्याय उपसंहार के अन्तर्गत अमृतराय के उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त नारी जीवन के विविध आयामों का निष्कर्षात्मक आकलन विश्लेषण की प्रस्तुति की है। यहाँ पर अति संक्षेप में प्रस्तुत ग्रंथ की उपादेयता और उपलब्धियों को सम्मेलित करते हुए उसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं को उकेरा है।

अन्त में परिशिष्ट के अन्तर्गत उपजीव्यग्रंथ. उपकारकग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची को प्रस्तुत किया है।

साहित्य आवश्यक रूप से समाज-सापेक्ष होता है किसी भी साहित्य का वास्तविक अध्ययन तत्कालीन इतिहास, सांस्कृतिक परंपरा, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक परिवेश को सन्दर्भ में रखकर देखने से होता है। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध द्वारा मैंने अमृतराय के उपन्यासों में निहित नारी चरित्रों को एक नये आयाम के साथ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। मेरी पूर्ण कोशिश रही है कि अमृतराय जैसे बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार का एक नया आयाम साहित्य प्रेमियों के सामने आ सकें। कोई भी शोधकार्य अंतिम नही होता। यदि वह भविष्य की संभावनाओं को उजागर करता है तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य के द्वारा मेरी यही कोशिश रही है कि मेरा यह शोधकार्य शोधार्थियों को अवश्य पसन्द आएगा व भविष्य में होने वाले अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

****

ARTS COLLEGE
MKHEDA

Annexure - A

Summary of the Project

किसी भी महान् रचनाकार की अपनी एक निश्चित विचारधारा और दार्शनिक अभिरूचि होती है, जिसके आधार पर वह अपनी जीवन दृष्टि एवं कला दृष्टि के विभिन्न मान-मूल्यों की अवधारणा और कला कृतियों में प्रस्तुत करता है। विचारधारा से तात्पर्य मान्यता, विश्वास, सिद्धान्त और आचरण के कार्यकारण और परिणाम रूप से है। प्रेमचन्द युग के पहले कथाकारों में रोमांच का अनुभव और मनोरंजन का उद्देश्य प्रमुख था जो प्रेमचन्द युग में आदर्शोन्मुखी, यथार्थवाद तथा निम्नमध्यवर्ग के प्रति सहानुभूति वाले संस्कारों, विचारों में विकसित हुआ।

अमृतराय का युगीन परिवेश प्रारम्भ में स्वातंत्र्य संघर्ष एवं प्रगतिशील आस्थाओं के सतत् संघर्ष का था और स्वातंत्र्योत्तर दौर में राजनैतिक चेतना के विकास और प्रगतिगामी विचारधारा एवं प्रतिबद्धता के सुद्बोधन का रहा है। अमृतराय का लेखनकाल स्वतन्त्रता के पूर्व से ही शुरू हो जाता है, किन्तु उपन्यासकार के रूप में स्वतंत्रता के पश्चात ही प्रतिष्ठित हुए है। प्रगतिशील लेखक संघ के वे प्रमुख सदस्य रहे है। प्रगतिशील साहित्यकार के रूप में उन्होंने अपने युगीन परिवेश का कलात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

19 वीं - 20 वीं शताब्दी में भारतीय हिन्दू समाज में अनेक कु-प्रथाएँ मौजूद थी जैसे बाल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-विवाह निषेध, पुनः विवाह निषेध, अस्पृश्यता, जाति-पाँति के बन्धन आदि। इन सब दूषणों को दूर करने के लिए आर्य समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफिकल सोसायटी आदि अनेक स्वैच्छिक संस्थाओं ने बहुत बड़ा योगदान दिया। इन सबके अलावा तत्कालीन साहित्यकारों ने भी इन विषयों पर अपनी कलम चलायी। इस युग के बहुत से समाज सुधारकों ने विविध सामाजिक समस्याओं को ध्यान मे रखते हुए समाज मे नवजागरण एवं नवीन विचारों का प्रचार-प्रसार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। इन समाज सुधारकों का मुख्यतः ध्यान नारी की दयनीय स्थिति पर ही अधिक केन्द्रित रहै तथा उसी को केन्द्र में रखकर ही सुधारादि के कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता था। स्वतंत्रता पूर्व दौर के सामाजिक

जनजीवन में गाँधीजी ने सत्य, अहिंसा और मानवतावाद का संदेश दिया। उन्होंने विधवा-विवाह का समर्थन, स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा, परदा प्रथा का विरोध किया, अस्पृश्यता का निवारण गाँधीजी से बढ़कर और किसी नहीं किया। सभी धर्म सुधारकों द्वारा भारत में एक सुधारवादी चेतना आयी जिससे हमारे भारतीय समाज में स्वातंत्र्योत्तर दौर में स्त्री शिक्षा, शैक्षणिक विकास की भावना को बल मिला। यही स्थिति प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यासकारों की रहीं। सदियों से दुःख पीड़ा भोगती आ रही नारी जीवन के विविध पहलुओं को उन्होंने अपने उपन्यासों का विषय बनाया और उसकी समस्याओं का विषद विवेचन करके अपनी ओर से कुछ समाधान भी प्रस्तुत किये है।

प्रेमचन्द युग सुधारवादी संस्थाओं व नारी मुक्ति आंदोलनों का युग था। इस युग से नारी जीवन में बदलाव के चिन्ह परिलक्षित होते हैं। स्वयं प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी के सच्चे एवं वास्तविक चित्रों को प्रस्तुत करके उसके दुःख-दर्द उसके जीवन की करूणता से लोगों को अवगत कराया है।

प्रेमचन्दोत्तर युग सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में चरमसंघर्ष का युग था। सामाजिक आंदोलनों में सबसे ज्यादा नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने पर अधिक बल दिया गया था क्योंकि उस समय नारी की स्थिति अत्यंत पीड़ाजनक थी। उसका स्थान अब भी दोयम दर्जे का ही था। विवाह या घर के अन्य किसी भी मामलों में उसकी इच्छा-अनिच्छा आदि कोई महत्व नहीं रखती थी। समाज में व्याप्त नारी की ऐसी दयनीय दशा का चित्रण प्रगतिवादी उपन्यासों ने भली-भाँति किया है। स्वयं अमृतराय ने 'बीज', 'नागफनी का देश', 'भटियाली', 'हाथी के दाँत', 'धुआँ', 'सुख-दुःख' उपन्यासों में नारी की दयनीय दशा का यथार्थ चित्रांकन करके उनके प्रति सहानुभूति दर्शायी है।

नारी की दयनीय दशा के पीछे यदि कोई जवाबदार था तो वह था - भारतीय समाज में व्याप्त पितृसत्तामत्क व्यवस्था जो सदियों से उसका पीछा नहीं छोड़ती। भारतीय समाज की सबसे बड़ी विचित्रता यह रही है कि एक ओर तो वह नारी को **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवताः'** कहकर उसे जगत-जननी, देवी, लक्ष्मी, माता,

सरस्वती आदि अनेक रूपों में उसकी वंदना की है, उपासना की है। तो दूसरी तरफ उसी नारी को पीड़ित, प्रताड़ित करने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी है। उसका जीवन संघर्षशील रहा है। समाज में उसका स्थान निर्जीव पदार्थों सा या दोयम दर्जे का ही था। उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह गया था। एक क्रय-विक्रय की वस्तु के समान ही उसका मूल्य आँका जाता था। घर-परिवार एवं समाज में उसका स्थान नीचा ही रहा है।

अमृतराय और उनके समकालीन बहुत से प्रगतिवादी लेखक तत्कालीन समाज के नारी विरोधी खोखलें आदर्शों को मानने के पक्ष में बिल्कुल नहीं थे, जिससे नारी पुरूष की गुलाम या दासी हो। वे भारतीय नारी की स्वतंत्रता की माँग करते है। उसकी खोयी हुई अस्मिता को पुनः लौटाना चाहते थे। नागार्जुन ने लिखा है-"किसी भी युग में स्त्री को अमृत पीने का सुयोग नहीं मिला। पुरूष को अमृत पिलाकर स्वयं वह विषपान ही करती आई है"

अमृतराय का नारी के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रहा है। उन्होंने उनकी समस्याओं का सम्यक विश्लेषण कर उसके निवारण के लिए तर्कसम्मत समाधान भी प्रस्तुत किये है। उस समय देश को अंग्रेज महापुरूषों से मुक्ति मिल चुकी थी और दूसरी ओर विभिन्न समाज सुधारकों के रचनात्मक प्रयासों से समाज में परिवर्तन और विकास के चिन्ह भी दिखलाई पड़ने लगे थे। नारी की सामान्य स्थिति में भी पर्याप्त सुधार होने प्रारंभ हो गए थे। लेकिन सत्यता यह है कि समाज सुधार की प्रवृत्ति देखने को तो मिलती है लेकिन आंशिक रूप में । लोग अभी भी परंपरागत रीतियाँ या खोखली मानसिकता को छोड़ने के पक्ष में नहीं थे। इसी परिस्थिति का वर्णन करते हुए अमृतराय लिखते है-

"आर्य समाज का इस समय काफी दौर था। प्रचारक लोग घूमते रहते। जगह-जगह सभाएँ होती, जल्से होते, सनातनी पंडितों से शास्त्रार्थ होते। बाल-विवाह की बुराइयाँ बतलायी जाती, अनमेल विवाह की खराबियाँ बतलायी जाती, विधवा-विवाह के शास्त्रीय प्रमाण जुटाये जाते, करारदाता की निन्दा की जाती। यह सवाल बिल्कुल दूसरा है कि इन बातों में कितना हिस्सा जबान जमा खर्च था और कितने पर खुद

अगुआ लोग अमल करने को तैयार थे। बातें ज्यादा थी, अमल कम। जो लोग मंच पर खड़े होकर धुआंधार व्याख्यान देते थे और शादी में लेन-देन की प्रथा को बुरा कहते थे, खुद चोरी-चोरी वहीं काम करते थे, लेते भी थे और देते भी थे। विधवाओं की दशा पर आठ-आठ आँसू रोते थे लेकिन खुद इसके लिए तैयार न थे कि किसी विधवा से ब्याह कर ले या अपने बेटे का ब्याह करा दें या कि अपनी विधवा बेटी का ब्याह फिर से करने का साहस अपने भीतर पा सकें। होता ज्यादातर वहीं था जो सदा से होता आया था, मगर बातें बड़ी-बड़ी होती थी।"

भारतीय समाज में विधवाओं एवं वेश्याओं की स्थिति समाज के लिए एक चुनौती रही है अमृतराय ने अपने उपन्यासों में विधवाओं के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाया है। 'भटियाली' उपन्यास इसका उदाहरण है। वेश्याओं की निमिति भी हमारे समाज की देन है। आर्थिक अभाव के कारण मजबूरी में नारी को वेश्या बनना पड़ता है। 'धुआँ' उपन्यास की काजल इसका उदाहरण है। आर्थिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत कारण ही उसे आदर्श गृहिणी पद से च्युत कर वेश्यालय की गलियो में भेजते है। अमृतराय का आत्मशैली में कथावाचक के रूप में कथन है- "जो समाज इतना अंधा है कि चढ़ी जवानी में माँग का सिंदूर पुँछ जाने पर भी उस अभागिन को दूसरा घर नहीं करने देता, उसे क्या नैतिक आधार है कि वो कैसी भी नैतिकता की बात करें। तुमने जब बिना पतवार की डोंगी की तरह उसे डाल ही दिया है बहते पानी में तो फिर छोड़ो उसे- लगेगी जिस किनारे पर जाकर लगना होगा।"

विवाह पूर्व प्रेम आकर्षण को भी अमृतराय ने अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है। 'हाथी के दाँत' में रावल रत्ना इसका उदाहरण है। 'बीज' उपन्यास में महेन्द्र, मालती व राजेश्वरी के माध्यम से व्यक्त किया है। अमृतराय ने इन चरित्रों के माध्यम से समाज के इन लोगों पर तीखा व्यंग्य किया है जो अपने क्षणिक सुख के लिए किसी स्त्री की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ करके नाजायज फायदा उठाते है। विवाह पूर्व प्रेम आकर्षण जहाँ मात्र वासना का स्थान है मित्रता का नही। ऐसे आकर्षण से बचने के लिए मालती व पार्वती के द्वारा अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

ARTS COLLEGE

विवाहोत्तर आकर्षण की समस्या व उसके परिणामों की चर्चा भी अमृतराय ने 'हाथी के दाँत' व 'नागफनी का देश' उपन्यास में की है। विवाहोपरान्त स्त्री के किसी पर-पुरूष की ओर आकर्षित होना दाम्पत्य जीवन में विघटन का एक कारण बन जाता है। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में स्त्री चरित्रों की गरिमा को बनाए रखने के लिए पूरा प्रयत्न किया है।

अमृतराय ने विवाह संस्था का समर्थन किया है। अर्न्तजातीय विवाह को वे अनुचित नहीं मानते। 'बीज' उपन्यास में सत्य व उषा का विवाह करवाकर वह एक दृष्टान्त प्रस्तुत करते है। अमृतराय चाहते थे कि स्त्री का उचित मान-सम्मान व आदर सत्कार होना चाहिए। वे नारी के उत्कर्ष व विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहे है। अमृतराय ने नारी के विविध रूपों को अपने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त कर पाठकों के सामने खोलकर कर दिया है।

आधुनिक जन-जीवन में स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में यौन स्वच्छन्दता और परस्पर अविश्वास की भावना होना स्वाभाविक है जो युगीन परिवेश की देन है इसी का यथार्थपरक चित्रण 'नागफनी का देश' व 'हाथी के दाँत' में देखने को मिलता है। अमृतराय नारी को स्वतंत्र तो बनाना चाहते थे। किन्तु उसे स्वच्छन्द बनाना नहीं चाहते थे। उनके मन में हमेशा भारतीय नारी का आदर्श बना रहा। वे पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगी हुई नारियों के उन्मुक्त, स्वेच्छाचार को कतई पसन्द नहीं करते। अमृतराय को ऐसी पाश्चात्य सभ्यता बिल्कुल रास नही आती, जो नारियों को भोग विलास की पुतली बना दें। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री चरित्रों की गरिमा बनाए रखने के लिए पूरा प्रयत्न किया है।

अमृतराय ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी के सकारात्मक जीवन मूल्यो की स्थापना की है। अमृतराय के अनुसार आदर्श वह है जहाँ स्त्री को भी परिवार का सम्मानित सदस्य मान जाय। उन्होंने नारी को परम्परा एवं आदर्श से अलग उसके सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में देखते हुए उसके जीवन संघर्ष को पूरी संवेदनाओं को विस्तार के साथ अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

****

Annexure - B

Contribution to the Society

"हिन्दी साहित्य में प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का योगदान"

प्रस्तुत शोध कार्य के चयन में जो कारण मौजूद है वह वर्तमान परिवेश और युगीन परिस्थितियों में अत्यन्त प्रासंगिक है। आज समाज और साहित्य दोनों में 'नारी-विमर्श' जोर-शोर पर है। नारी प्रारम्भ से ही साहित्य सर्जन के केन्द्र में तो रही लेकिन उसकी छवि की सही ढंग से मूल्यांकन आज तक नहीं हो सका है। वर्तमान परिवेश आग्रह करता है कि युगीन परिस्थितियों के अनुरूप नारी की अस्मिता और गरिमा की स्थापना के लिए नारी-विमर्श हों। आज नारीवाद, नारी-मुक्ति और नारी विमर्श की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक स्तर पर बड़ी भारी चर्चा हो रही है जिसके केन्द्र में नारी की अस्मिता की पहचान के साथ-साथ उसके अधिकारों, स्वातंत्र्य पर पुरजोश से विचार-विमर्श जारी है। आवश्यकता इस बात की है कि नारी को केन्द्र में रखकर या फिर नारी के प्रति सकारात्मक रूख अपनाने वाली उन रचनाओं को भी हाँसिए पर नहीं रखा जाना चाहिए जो दशकों पहले अस्तित्व में आ चुकी है और आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो उठी है। अमृतराय का नारी चिन्तन भी इसका अपवाद नहीं है।

प्रस्तुत मेरा यह शोध कार्य समुद्र जितने विशाल हिन्दी साहित्य जगत में एक छोटे से बूँद जितना प्रयास मात्र है। अपने इस अनुसंधान द्वारा मैंने पूरी कोशिश की है कि अपने इस शोध कार्य को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत कर अमृतराय जैसे एक बहुमुखी एवं प्रतिभाशाली साहित्यकार का एक नया आयाम साहित्य प्रेमियों के सामने आ सकें।

अमृतराय का युगीन सामाजिक परिवेश ऊँच-नीच, जात-पाँत, भेद, अस्पृश्यता और आर्थिक विडम्बनाओं से ग्रस्त रहा है। उन्होंने अपने समय में रहकर आनेवाले कल को अच्छी तरह से पहचान लिया था। अतः उनके साहित्य में आनेवाले कल की परछाही देखने को मिलती है। वर्तमान समय में 'नारी-विमर्श' का बीज हम निश्चित रूप से अमृतराय के साहित्य में ढूँढ सकते है। इसी आधार पर यह कहा जा

सकता है कि अमृतराय आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने कि वे अपने समय में थे। उनका साहित्य तो मूल प्रेरणा स्त्रोंतो के समान है।

अमृतराय के उपन्यास साहित्य का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात मैने यह महसूस किया कि उनके उपन्यासों में जो व्यक्त नारी विमर्श है उससे प्रत्येक मनुष्य को प्रेरणा ग्रहण करने की सीख मिलती है। आज इक्कीसवीं शताब्दी की दहलीज पर आकर भी हम लोग अपने सामाजिक जीवन में जातिभेद से मुक्त नहीं हो पाये है उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से इस समस्या को प्रस्तुत किया है दूसरी तरफ समाज की नजर में घृणित वेश्या नारी के प्रति उनकी दृष्टि गई है वे नारी को महज एक वासना की कठपुतली या साधन पात्र न मानकर उसके महानता के दर्शन करवाते है। इसलिए उन्होंने समाज में पीड़ित-प्रताड़ित नारी को केवल सामाजिक धरातल पर ही नहीं बल्कि राजनैतिक धरातल पर भी समानाधिकार दिलवाने की कोशिश की है। वे भारतीय नारी की स्वाधीनता की माँग करते है उसकी खोयी हुई अस्मिता को पुनः लौटाना चाहते थे। वे उसे पराधीन नहीं बल्कि स्वाधीन देखना चाहते थे और वे उसके उत्कर्ष के लिए तथा उन्हें उचित मान-सम्मान दिलाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

अमृतराय के उपन्यासों में नारी के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। उन्होंने समाज में समता की कल्पना कर पारम्परिक रूढ़ियों का खण्डन करवाया है तो अनमेल विवाह के परिणामों को भी समाज के सम्मुख रख शिक्षा लेने की प्रेरणा रखी है। विवाह पूर्व पुरूष के साथ शारिरिक सम्बन्ध रखने पर गर्भवती हो जाने के बाद पुरूष का मुँह मोड़ लेना और उसके पश्चात नारी की विवशता घुटन आदि का दारूण चित्र खींच नवयुवक एवं नवयुवतियों को संदेश देने का प्रयास किया है। आज नारी वर्ग भी अपने जैविक-सामाजिक सम्बन्धों में पुरूषों के समकक्ष है उसे भी इच्छित जीवन शैली अख्तियार करने का हक है इसलिए वर्तमान समय में आज चारो तरफ 'बेटी बचाओं' आन्दोलन जोर-शोर से चल रहा है। नारी साक्षरता अभियान गति पर है। घर से बाहर वह सुरक्षित नहीं है आए दिन बलात्कार की घटनाएँ पढ़ने को मिलती है, परिवार में वह अपने अधिकारों से वंचित दिखाई पड़ती है, दहेज प्रथा का रूप बदल गया। कहने का तात्पर्य यह है कि आजादी के इतने वर्षों के बाद भी नारी की स्थिति में

ज्यादा सुधार देखने को नहीं मिलता। युग बदल गया, परिस्थितियाँ बदल गई लेकिन नारी की दशा में बहुत बदलाव देखने को नही मिलता। उसका शोषण अब भी जारी है तरीका बदल गया है। अमृतराय ने अपने उपन्यासों में सकारात्मक जीवन मूल्यों की स्थापना की है उनके अनुसार आदर्श वह है जहाँ स्त्री को भी परिवार का सम्मानित सदस्य माना जाए तथा यौन क्षेत्र में भी उसे पुरूष के समान ही अधिकार एवं एकनिष्ठता प्राप्त हो।

आज समय अत्यन्त तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। शिक्षा ने स्त्रियों को स्वतंत्र चिन्तन की शक्ति प्रदान की है उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन देखने को मिल रहा है राजनीति के क्षेत्र में भी वह अपना योगदान दे रही है जीवन के हर क्षेत्र में नारी पुरूष के लिए एक चुनौती बन रही है फलतः नारी सम्बन्धी मान्यताएँ बदल रही है आज समाज में विधवा विवाह मान्य है। तलाक जैसी बात कानून से वैध है। नारी मुक्ति आन्दोलन समाज में बल पकड़ रहा है। दहेज के खिलाफ आवाज उठ रही है। ऐसे में अमृतराय नारी को पूर्ण शक्ति से सम्पन्न देखना चाहते है। उन्होंने नारी जीवन के विविध पहलुओं और समस्याओं को उभारा भी है तो चुनौतियों को स्वीकार कर दूसरी तरफ नारी को उन चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार किया है। वे नारी जाति का आह्वान करते है कि अपने स्वातंत्र्य और अधिकारों की लड़ाई लड़े और निरन्तर संघर्षरत रहे। साहित्य में प्रतिबिम्बित होने वाला समाज और उस समाज की नारी हाशिए पर न रहकर केन्द्र में रहनी चाहिए तथा नए मूल्यों की निर्माता भी बननी चाहिए इसी ललक ने अमृतराय के नारी विषयक दृष्टिकोण को एक नए ढंग से रचनाओं में अवतरित होने का अवसर दिया है परिणामतः आधुनिक नारी के उत्थान और उसमें आयी नवीन चेतना का उद्घोष उनके उपन्यासों में प्राप्त है।

उपर्युक्त सभी बातों का गहन अध्ययन किया जाए तो अमृतराय के उपन्यासों में जो नारी चेतना है वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा पाठकों के सम्मुख अमृतराय की नारियों के प्रति जो संवेदना थी, उसे प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास है।

कोई भी शोधकार्य अन्तिम नहीं होता यदि वह भविष्य की संभावनाओं को उजागर करता है तो महत्व और भी बढ़ जाता है। मैंने अपनी नारी सहज दृष्टि से इन उपन्यासों का गहन अध्ययन करके प्रस्तुत शोधकार्य का लेखन किया है इसमें नारी की अस्मिता की अनेक पर्तों को स्पर्श करने का प्रयत्न किया है। प्रस्तुत शोधकार्य साहित्य जगत में नारी विमर्श के क्षेत्र में भावी शोध-कर्ताओं को एक नई आधार भूमि प्रदान कर सकें यही मेरी केशिश रही है, फिर भी इसमें कोई कमी या त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। इस शोधकार्य में मैं कितनी सार्थक हुई हूँ इसका निर्णय सुधी पाठक ही प्रमाणित कर सकेंगे।

******

Principal
Arts College Limkheda
Dist. Dahod, Guj.-389140

ARTS COLLEGE LIMKHEDA